वैश्विक परिप्रेक्ष्य में प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा तथा शुरूआती औपचारिक शिक्षा की स्थिति

प्रभात कुमार*

वर्तमान समय में भी संपूर्ण भारत में बुनियादी स्तर पर औपचारिक शिक्षा का प्रसार अत्यंत सीमित स्तर पर हुआ है। प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा (अर्ली चाइल्डहुड केयर ऐजुकेशन-ई.सी.सी.ई.) की अवधारणा को धरातल पर भली-भाँति उतारना अभी शेष है। यह लेख भारत में पूर्व-विद्यालयी प्रणाली में बच्चों के लिए औपचारिक शिक्षा से संबंधित नीतिगत अवधारणा का विश्लेषण करता है। साथ ही बुनियादी स्तर पर पाठ्यचर्या, पाठ्यक्रम और शिक्षणशास्त्र से जुड़े संप्रत्यय की वर्तमान स्थिति और नीतिगत दृष्टिकोण को प्रस्तुत करता है। साथ ही, वैश्विक मंच पर ई.सी.सी.ई. कार्यक्रमों के संदर्भ में वैश्विक दृष्टिकोण को भी यह लेख प्रस्तुत करता है। इसके अलावा, यह लेख उन दार्शनिकों एवं शिक्षाविदों के वैश्विक दृष्टिकोणों को भी प्रस्तुत करता है जो बाल्यावस्था, शिक्षा, औपचारिक शिक्षा की उम्र के बीच के अंतर्संबंधों पर अभिव्यक्त किए गए हैं। यह लेख विभिन्न देशों में औपचारिक शिक्षा की शुरूआती उम्र से संबंधित आँकड़े भी प्रस्तुत करता है। संधारणीय या सतत विकास के लक्ष्यों को वास्तविक अर्थों में वर्ष 2030 तक प्राप्त करने में ई.सी.सी.ई. की केंद्रीय भूमिका और बुनियादी स्तर पर होने वाले औपचारिक-अनौपचारिक शैक्षिक प्रयासों की भूमिका को रेखांकित करने का प्रयास भी यह लेख करता है। यह लेख राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर विकसित शोधों एवं रिपोर्टों की विषयवस्तु का ई.सी.सी.ई. को आधार बनाते हुए विश्लेषण कर लिखा गया है।

वैश्विक स्तर पर हुए कई शोध-अध्ययनों से पता चला है कि गुणवत्तापूर्ण औपचारिक–प्रारंभिक शिक्षा कार्यक्रम, जो बच्चों को उचित प्रोत्साहन और सार्थक शिक्षण अनुभव प्रदान करता हो, उनसे व्यक्ति के भविष्य में सीखने और बेहतर प्रदर्शन करने की क्षमता में उत्तरोत्तर वृद्धि होती है। इससे एक बच्चा न केवल विद्यालय में बल्कि अपने अग्रगामी जीवन में भी सक्रिय, सहज और स्पष्ट बनता है। सितंबर 2015 में 'प्रारंभिक बाल विकास में निवेश' विषय पर पूर्व संयुक्त राष्ट्र महासचिव बान की मून ने अपने भाषण में कहा था— "पहली बार, वैश्विक विकास से संबंधित कार्यसूची में प्रारंभिक बाल विकास के लक्ष्य को शामिल किया गया है। संधारणीय विकास लक्ष्य, 2030 यह मानता है कि प्रारंभिक बाल विकास उस परिवर्तन को लाने में मदद कर सकता है, जिसे हम आने वाले 15 वर्षों में हासिल करना चाहते हैं।"[1] *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* द्वारा विद्यालयी शिक्षा हेतु 5+3+3+4

**व्याख्याता*, प्राथमिक शिक्षक शिक्षा महाविद्यालय, शाहपुर पटोरी, समस्तीपुर, बिहार 848504

के अंतर्गत बुनियादी स्तर (3–8 साल) को दो भागों में (अर्थात आँगनवाड़ी या पूर्व-विद्यालय के 3 साल और प्राथमिक विद्यालय में कक्षा 1–2 में 2 साल)[2] विभाजित करती है। इसके साथ ही राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 बुनियादी स्तर पर पाँच वर्षीय लचीली, बहु-स्तरीय, खेल एवं गतिविधि आधारित अधिगम और प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा (ई.सी.सी.ई.) से संबंधित पाठ्यचर्या और शिक्षणशास्त्र को शामिल करने की बात करती है।[3] हाल के वर्षों में ई.सी.सी.ई. एक उच्च प्राथमिकता वाले क्षेत्र के रूप में राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर उभरा है। यूनिसेफ (2017) के अनुसार आरंभिक अवस्था में की गई तैयारी बच्चे को औपचारिक विद्यालयी शिक्षा से जोड़ने में जितनी सहायक है उससे कहीं अधिक प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल में प्रभावी और कारगर है। ई.सी.सी.ई. बच्चे में अंतर्निहित सभी विकासगत संभावनाओं यथा उसकी सामाजिक, भावनात्मक, संज्ञानात्मक और शारीरिक आवश्यकताओं के संदर्भ में संपूर्ण विकास पर ज़ोर देती है, ताकि आजीवन सीखने और कल्याण के लिए एक ठोस और व्यापक आधार स्थापित किया जा सके।[4]

लेख के इस विषय की प्रासंगिकता समीचीन लगती है, जब भारत सहित अन्य देश बुनियादी स्तर के बच्चों के लिए औपचारिक शिक्षा तथा किए जाने वाले देखभाल और विकास संबंधी नीतिगत प्रयासों की सराहना कर रहे हैं। वर्तमान समय में यह बात सिद्ध हो चुकी है कि आजीवन चलने वाली उत्तरोत्तर विकास की प्रक्रिया का मूल बाल्यावस्था में ही सन्निहित होता है। इसके साथ ही आने वाली पीढ़ियों के संदर्भ में चिह्नित संधारणीय विकास लक्ष्य, जिसे 2030 तक प्राप्त करना है, को प्रत्येक देश अपने देश के बच्चे के बचपन को खुशहाल, बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान से परिचित करवाते हुए खेल-खेल में आनंददायी जीवनोपयोगी शिक्षा प्रदान करने के भरसक प्रयास कर रहे हैं।

उद्देश्य

- बुनियादी स्तर पर औपचारिक शिक्षा को देने या न देने के संदर्भ में राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर व्यक्त विचारों तथा विभिन्न देशों में नीति के स्तर पर ई.सी.सी.ई. के संदर्भ में कार्यान्वित हो रहे विचारों का विश्लेषण करना।
- ई.सी.सी.ई. के संदर्भ में किए जा रहे प्रयासों के बरक्स संपूर्ण जीवन के लिए मिलने वाले ठोस आधार द्वारा 'अतुल्य भारत' की संकल्पना को साकार करने तथा संधारणीय विकास लक्ष्यों की प्राप्ति में निभाई जाने वाली भूमिका का अध्ययन।

विधि

ऑफ़ लाइन और ऑन लाइन उपलब्ध दस्तावेज़ों की विषयवस्तु विश्लेषण विधि द्वारा अध्ययन।

विश्लेषण

राष्ट्रीय स्तर पर ई.सी.सी.ई. और बुनियादी स्तर के संदर्भ में औपचारिक शिक्षा की उपस्थिति

बुनियादी स्तर की शिक्षा के प्रति भारत सरकार आजादी के समय से संवेदनशील रही है। *भारतीय संविधान* के अनुच्छेद 45 के संशोधित रूप के

अनुसार कि 'राज्य छह वर्ष की आयु पूरी करने तक सभी बच्चों को ई.सी.सी.ई. प्रदान करने का प्रयास करेगा।'[5] *राष्ट्रीय बाल नीति 1974* "बच्चे के समग्र और एकीकृत विकास पर बल देने के साथ-साथ देखभाल करने वालों की क्षमताओं के निर्माण की भी बात करती है। *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986* ई.सी.सी.ई. को मानव विकास के लिए एक महत्वपूर्ण निवेश मानती है और बाल विकास की समग्र और एकीकृत प्रकृति को मान्यता देती है। *राष्ट्रीय पोषण नीति 1993* ने भी प्रारंभिक बचपन के दौरान बच्चों की देखभाल और पोषण के लिए हस्तक्षेप को अत्यंत आवश्यक माना है। राष्ट्रीय स्वास्थ्य नीति 2002 और बच्चों के लिए राष्ट्रीय कार्य योजना 2005 के साथ-साथ राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 भी ई.सी.सी.ई. के लिए सहायक नीतिगत पहल की बात करती है। बारहवीं पंचवर्षीय योजना (2012–2017) इस बात पर बल देती है कि ई.सी.सी.ई. में व्यवस्थित प्रणालीगत सुधार सिर्फ आँगनवाड़ी केंद्रों की ज़िम्मेदारी नहीं है। इसके साथ ही यह इस बात पर भी बल देती है कि ई.सी.सी.ई. से जुड़े सभी सार्वजनिक, निजी और स्वैच्छिक क्षेत्रों की अन्य सेवाओं के बीच सहक्रियात्मकता (सिनर्जी) आवश्यक है।

भारत ने प्रारंभिक बाल्यावस्था के संदर्भ में नीतिगत ढाँचे को मज़बूत करने में उल्लेखनीय प्रगति की है। भारत सरकार ने 2013 में समावेशी, न्यायसंगत और प्रासंगिक अवसरों को बढ़ावा देने की प्रतिबद्धता के साथ 6 वर्ष से कम उम्र के सभी बच्चों के इष्टतम विकास और सक्रिय सीखने की क्षमता को बढ़ावा देने के लिए राष्ट्रीय प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा नीति को लागू किया।[7] इस नीति की मुख्य अवधारणा यह थी कि पोषण, स्वास्थ्य, मनो-सामाजिक और भावनात्मक आवश्यकता की सहक्रियात्मकता (सिनर्जी) पूर्ति के उपरांत ही देखभाल शब्द की व्यापकता को समझा जा सकता है और फिर शुरूआती सीखने की क्षमता का पूरा उपयोग किया जा सकता है। *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* में दो नई बातों का पहली बार प्रावधान किया गया—

1. बुनियादी स्तर के लिए अलग से पाठ्यचर्या का निर्माण करना।
2. बुनियादी स्तर पर औपचारिक शिक्षा के एक छोटे हिस्से को भी समाहित करना।

इस प्रकार, *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* बुनियादी स्तर पर पाँच कक्षाओं (नर्सरी, एल.के.जी., यू.के.जी., कक्षा 1 और 2) के लिए पाँच वर्षीय लचीला, बहुस्तरीय खेल एवं गतिविधि आधारित अधिगम के साथ-साथ ई.सी.सी.ई. से संबंधित पाठ्यचर्या और शिक्षणशास्त्र को भी शामिल करने की बात करती है। इस प्रकार नीति उस मज़बूत आधार को कक्षाई एवं गैर-कक्षाई अधिगम, जिसमें पढ़ना, लिखना, बोलना, शारीरिक शिक्षा, कला, भाषा, विज्ञान और गणित शामिल हैं, द्वारा तैयार करने की बात करती है, जो बच्चे को वास्तविक समझ और ज्ञान की ओर ले जाए इसके साथ ही बच्चे की संज्ञानात्मक समझ को उभारते हुए उसके चरित्र निर्माण की प्रक्रिया की शुरूआत करें और इक्कीसवीं सदी के मुख्य कौशल, जैसे— संवाद, सहयोग, आलोचनात्मक सोच एवं रचनात्मकता से बच्चों को युक्त करें।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुसार वर्तमान में प्राथमिक विद्यालयों में बड़ी संख्या में बच्चे 'सीखने के संकट' का सामना कर रहे हैं। प्राथमिक विद्यालय प्रणाली में लगभग पाँच करोड़ से अधिक बच्चे बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान प्राप्त करने में असमर्थ हैं। वे बुनियादी पाठ को पढ़ने और समझने की क्षमता और बुनियादी जोड़-घटाव करने की क्षमता स्तर-अनुरूप नहीं रखते हैं। *विद्या प्रवेश 2022*, कक्षा 1 के लिए तीन महीने का खेल आधारित विद्यालय मॉड्यूल *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* की सिफारिशों के अनुसार विकसित किया गया है।[8] इसका उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि सभी बच्चे कक्षा 1 में प्रवेश करते समय आनंददायक और स्वागतयोग्य वातावरण का अनुभव करें, जिससे उनका विद्यालय में प्रवेश सहजता के साथ हो सकें। यह मॉड्यूल कक्षा 1 के पहले तीन महीनों या 12 हफ्तों में लागू करने के लिए गतिविधियों और कार्यपत्रकों का समावेश करता है। गतिविधियों को बच्चों में विभिन्न क्षमताओं, जैसे— मदद करना, साझा करना, अन्य बच्चों के साथ मिल-जुलकर रहना, विद्यालय की दिनचर्या का पालन करना, नए वातावरण में समायोजित होना आदि का विकास करने के लिए डिज़ाइन किया गया है। इन गतिविधियों के माध्यम से बच्चे बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान की अवधारणाओं को भी सीखेंगे। कक्षा 1 में प्रवेश करने वाले बच्चे विभिन्न पृष्ठभूमियों से आते हैं। उनमें से कुछ बच्चों ने पूर्व-विद्यालय या आँगनवाड़ी का अनुभव लिया है, कुछ बच्चों ने अच्छे घरेलू शिक्षा अनुभव प्राप्त किए हैं, जबकि अन्य बच्चे बिना किसी पूर्व-विद्यालयी शिक्षा के आते हैं। विद्या प्रवेश बच्चों के समग्र विकास को बढ़ावा देने का एक प्रयास है, जो कक्षा 1 के लिए आवश्यक क्षमताओं के विकास के लिए आयु-उपयुक्त अनुभव प्रदान करता है। यह मॉड्यूल निपुण भारत 2021, भारत सरकार के 'बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान' फाउंडेशन लिटरेसी एंड न्यूमेरेसी (FLN) पर राष्ट्रीय मिशन का एक अभिन्न हिस्सा है।

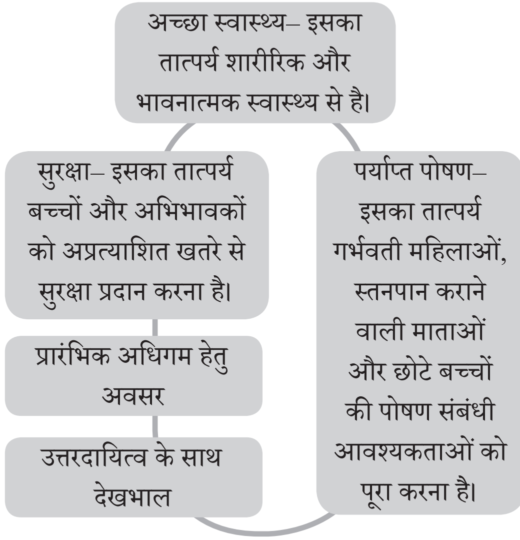

बुनियादी स्तर हेतु राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2022 भारत में 3–8 आयु वर्ग के बच्चों के लिए अब तक का पहला एकीकृत पाठ्यचर्या ढाँचा है।[9] जो *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* द्वारा अपनाए गए 'पाठ्यचर्या और शैक्षणिक' संरचना 5+3+3+4 के आलोक में विकसित किया गया है। बुनियादी चरण 3–8 वर्ष की आयु के बच्चों के संदर्भ में प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा के लिए एक एकीकृत दृष्टिकोण की कल्पना करता है। शिक्षा के इस पहले चरण की प्रकृति बच्चों को बेहतर भविष्य

वाला जीवन देने के संदर्भ में रूपांतरकारी है; जो कि आमूल-चूल बदलाव में सक्षम है। बुनियादी चरण से संबंधित सभी अध्ययन एवं शोध के द्वारा स्पष्ट रूप से यह निष्कर्ष निकलता है कि इस चरण के दौरान उच्च गुणवत्ता वाली देखभाल और शिक्षा का सभी व्यक्तियों के लिए आने वाले जीवन में सकारात्मक परिणाम होता है और इस प्रकार इन परिणामों का पुनः देश के विकास में योगदान होता है।

अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर ई.सी.सी.ई. और बुनियादी स्तर के संदर्भ में औपचारिक शिक्षा की उपस्थिति

यूनाइटेड नेशन, वर्ल्ड बैंक, यूनेस्को जैसी संस्थाएँ तथा अधिकांश देश इस बात को जानते हैं कि अगर इस धरती को रहने लायक बनाए रखना है तो हमें संधारणीय विकास (सस्टेनेबल डेवलपमेंट) से संबंधित सभी लक्ष्यों विशेष कर लक्ष्य 4 (समावेशी और न्यायसंगत गुणवत्तापूर्ण शिक्षा सुनिश्चित करना तथा सभी के लिए आजीवन सीखने के अवसरों को बढ़ावा देना[10]) को ई.सी.सी.ई. पर पूर्ण केंद्रित होकर ही प्राप्त किया जा सकता है। बाल अधिकार सम्मेलन (सी.आर.सी.), 20 नवंबर 1989 और सभी के लिए शिक्षा, (जोमटियन, थाईलैंड, 1990) ई.सी.सी.ई. को सबसे पहला लक्ष्य मानते हुए कहती है "सीखना जन्म से ही शुरू होता है।"[11] विश्व शिक्षा मंच, डकार (सेनेगल, 26–28 अप्रैल 2000) (World Education forum in Dakar, Senegal, 26-28April, 2000), और मॉस्को फ्रेमवर्क फ़ॉर एक्शन एंड को ऑपरेशन, 29 सितंबर 2010 पुनः ई.सी.सी.ई. के प्रति अपनी प्रतिबद्धता की पुष्टि करता है और कहता है... "इसलिए ई.सी.सी.ई. को आजीवन सीखने के संदर्भ में अधिकार के रूप में समझा जाना चाहिए। इसके सर्वविदित लाभ कई गुणा हैं और इसमें बेहतर स्वास्थ्य और पोषण, गुणवत्तायुक्त शैक्षिक दक्षता और लिंग समानता, अधिक रोज़गार और आय एवं जीवन की उच्च गुणवत्ता शामिल है... ई.सी.सी.ई. कार्यक्रम को बच्चों में शांति, समझ, गैर-भेदभाव और प्रकृति के साथ सामंजस्यपूर्ण संबंधों की भावना को बढ़ावा देना चाहिए।"[12]

यूनेस्को उन सभी प्रमुख हितधारकों के साथ सहयोग करता है, जो 8 वर्ष तक के छोटे बच्चों की देखभाल और शिक्षा से संबंधित हैं। यूनेस्को का मानना है कि विभिन्न देशों में ई.सी.सी.ई. गतिविधियाँ 3 वर्ष से अधिक उम्र के सभी बच्चों के लिए समग्र शिक्षा होनी चाहिए, जैसे—

- समग्र और गुणवत्तापूर्ण पूर्व-प्राथमिक शिक्षा को बढ़ावा।
- मस्तिष्क विकास अनुरूप उपयुक्त शिक्षणशास्त्र के उपयोग को बढ़ावा।
- प्राथमिक शिक्षा के साथ जुड़ाव।
- प्रारंभिक बाल्यावस्था के स्वास्थ्य, पोषण और सामाजिक सेवाओं के साथ संबंध।

प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा संबंधी वैश्विक रिपोर्ट 2024 में ई.सी.सी.ई. के संबंध में जो सिफारिशें की गई हैं, वह निम्नलिखित हैं[13]—

- **विद्यालय प्रवेश हेतु तैयारी के लिए ई.सी.सी.ई. को बढ़ावा देना**— देशों को प्रारंभिक शिक्षा के ऐसे अवसर विकसित करने चाहिए जिसके अंतर्गत बुनियादी कौशलों,

जैसे— उभरती साक्षरता, संख्यात्मकता और सामाजिक-भावनात्मक कौशल का इस तरह विकास किया जा सकें जिनमें शिक्षा के बेहतर परिणाम प्राप्त हों।

- **कमज़ोर बच्चों को प्राथमिकता देना**— सबसे कमज़ोर और वंचित बच्चों तक गुणवत्तापूर्ण ई.सी.सी.ई. की पहुँच को सुनिश्चित करना।
- **माता-पिता और देखभाल करने वालों को समर्थन देना**— सरकारों को पूरे समाज के लिए दृष्टिकोण अपनाना चाहिए और बच्चों के शुरूआती सीखने के अनुभवों को बेहतर बनाने के लिए माता-पिता के समर्थन कार्यक्रम और परिवार के अनुकूल नीतियों को शामिल करना चाहिए।
- **ई.सी.सी.ई. कर्मियों को महत्व देना**— सरकारों को सीखने का सुरक्षित, स्वस्थ और प्रेरक माहौल बनाने के लिए ई.सी.सी.ई. कर्मियों की भर्ती और प्रशिक्षण प्रक्रिया में अधिक निवेश करना चाहिए।
- **अनुसंधान का लाभ उठाएँ**— सरकारों को ई.सी.सी.ई. पाठ्यक्रम और शिक्षणशास्त्र की प्रासंगिकता एवं गुणवत्ता में सुधार करने के लिए सीखने और विकास की बहु-विषयक वैज्ञानिक समझ को अपनाना चाहिए।
- **सरकारों द्वारा निवेश में वृद्धि**— सरकारों से राष्ट्रीय शिक्षा बजट का कम से कम 10 प्रतिशत पूर्व-प्राथमिक शिक्षा के लिए आवंटित करने का आह्वान करना चाहिए।
- **अंतर्राष्ट्रीय प्रयास और भागीदारी को बढ़ावा देना**— अंतर्राष्ट्रीय समुदाय को जन्म से लेकर 8 वर्ष तक के बच्चों के लिए बेहतर तरीके से मिलकर काम करने के लिए एक वैश्विक पहल करनी चाहिए।
- **शिक्षा के अधिकार का विस्तारीकरण**— शिक्षा के अधिकार का विस्तारीकरण ई.सी.सी.ई. के अधिकार को स्थापित करते हुए किया जा सकता है। वैश्विक स्तर पर छोटे बच्चों की व्यापक आवश्यकताओं को ई.सी.सी.ई. के अधिकार को स्थापित कर प्रभावी ढंग से संबोधित किया जा सकता है, जिससे बेहतर शैक्षिक प्रतिफलों और आजीवन मिलने वाले लाभों को आधार मिल सकें।

विभिन्न देशों में बुनियादी स्तर पर औपचारिक शिक्षा की शुरूआत से संबंधित पैमाना तालिका 1 में दिया गया है।[14]

हम सभी जानते हैं कि विद्यालय की शुरूआत का अर्थ है, औपचारिक शिक्षा का प्रारंभ। भारतीय संदर्भ में अगर देखें तो यह ज्ञात होता है कि प्राथमिक विद्यालय अर्थात् कक्षा 1 से ही औपचारिक शिक्षा की शुरूआत हो जाती है अर्थात् छः वर्ष की उम्र से औपचारिक शिक्षा प्रारंभ हो जाती है। इसमें बुनियादी स्तर के अंतिम वर्षों में, जो ई.सी.सी.ई. के भी वर्ष है, अक्षर एवं संख्या ज्ञान के साथ-साथ मूल्य शिक्षा का प्रारंभ हो जाता है। रबीन्द्रनाथ टैगोर का मानना था कि पहले सात वर्षों तक बच्चे की शिक्षा की ज़िम्मेदारी प्रकृति पर छोड़ देनी चाहिए क्योंकि बच्चे को प्रकृति से प्रेम करने के लिए सबसे अधिक स्वतंत्रता की आवश्यकता

तालिका 1 — देश व औपचारिक शिक्षा की प्रारंभिक आयु

देश का नाम	औपचारिक शिक्षा की प्रारंभिक आयु (वर्ष में)	देश का नाम	औपचारिक शिक्षा की प्रारंभिक आयु (वर्ष में)
ऑस्ट्रेलिया	5	फ्रांस	3
ऑस्ट्रिया	6	जर्मनी	6
बहरीन	6	ग्रीस	5
बेल्जियम	6	हांगकांग	6
कनाडा	6	हंगरी	3
चिली	6	भारत	6
चीन	6	इंडोनेशिया	5–6
कोलंबिया	5	आयरलैंड	6
कोस्टारिका	6	इज़राइल	6
साइप्रस	5	इटली	6
इजिप्ट	6	जापान	6
इंग्लैंड	5	केन्या	6
फ़िनलैंड	7	कुवैत	6
मलेशिया	6	नीदरलैंड	5
मक्सिको	6	न्यूजीलैंड	6
नॉर्वे	6	पुर्तगाल	6
रूस	6	साउथ अफ्रीका	7
स्पेन	7	स्कॉटलैंड	5
सिंगापुर	7	स्वीडन	7
अमेरिका	5–8		

होती है।[15] टैगोर का विचार भारत के वर्तमान ई.सी.सी.ई. संदर्भित नीतिगत विचार से साम्यता रखता है। टैगोर (शेंकनर, 1976) जहाँ सात साल की उम्र से औपचारिक शिक्षा को प्रारंभ करने की बात करते हैं वहीं राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, 6 वर्ष या उसके बाद से शिक्षा में औपचारिकता को थोड़ी सरलता के साथ लाने की बात करती है। टैगोर कहते हैं कि "शिक्षा भारी, बोझिल या अमूर्त नहीं होनी चाहिए।"[16] इसलिए बुनियादी स्तर की शिक्षा में ही विद्यालय-पूर्व (आँगनवाड़ी या बालबाटिका) शिक्षा के साथ-साथ कक्षा 1 और 2 की औपचारिक शिक्षा सुगम व सहज रूप से प्रारंभ की जाती है। डी.वी. (अनुभव और शिक्षा, 1938) के शैक्षिक दर्शन का मुख्य सिद्धांत भी वर्णित करता है कि अनुभव पर आधारित सीखना सबसे प्रभावी होता है। डी.वी. का मानना था कि बच्चे निष्क्रिय रूप से जानकारी प्राप्त करने के बजाय व्यावहारिक गतिविधियों और व्यावहारिक अनुभवों में संलग्न होकर अधिक सीखते हैं। डी.वी. मानते हैं कि अगर 'सीखने' को बच्चे की प्रकृति का हिस्सा बनाना है तो बच्चों को बुनियादी स्तर के शुरूआती वर्षों में अपने आस-पास के वातावरण का सक्रिय रूप से पता लगाने, बदलाव करने और खुद से प्रयोग करने का अवसर प्रदान करना होगा। रूसो (1762) ने एमिल के माध्यम से एक युवा लड़के के विकास और देखभाल का विवरण दिया है। पेस्टोलोज़ी (होपकिंस, 2013)[17] के विचार प्रकृति के नियमों के अनुरूप थे; बच्चों को गतिविधि के माध्यम से, शब्दों के बजाय वस्तुओं/गतिविधियों के माध्यम से सीखना चाहिए और उन्हें अपने हितों का पीछा करने और अपने निष्कर्ष निकालने के लिए स्वतंत्र करना चाहिए। फ्रोबेल (द एजुकेशन ऑफ़ मैन, 1826) ने गीतों और संगीत के साथ अच्छी तरह

से निर्देशित खेल गतिविधियों के माध्यम से सीखने को प्रोत्साहित करने के लिए किंडरगार्टन स्कूल स्थापित किए।

यूनेस्को सांख्यिकी संस्थान (2024) के अनुसार, प्राथमिक विद्यालय से पहले प्री-स्कूल अवधि में नामांकित न होने वाले बच्चों की संख्या पिछले दशक में घटी है, जो 2009 में 52.1 मिलियन से घटकर 2018 में 47.2 मिलियन हो गई है। 2021 में यूनेस्को अपने एक अध्ययन में बताता है कि 193 देशों में 63 देश मुफ़्त पूर्व-विद्यालय शिक्षा देते हैं, 51 देश इसे अनिवार्य मानते हैं, जबकि 46 देश इसे मुफ़्त और अनिवार्य दोनों बनाए हुए हैं। 18 आर्थिक सहयोग और विकास संगठन के अंतर्गत आने वाले 38 देशों, लैटिन अमेरिका और कैरिबियन देशों में ई.सी.सी.ई. की अवधारणा को बहुत अच्छे से कार्यान्वित किया जा रहा है परंतु मध्य पूर्व, उत्तरी अफ्रीका और उप-सहारा अफ्रीका के देशों में स्थिति अच्छी नहीं है। ई.सी.सी.ई. शिक्षा का एक बहुत ही विविध क्षेत्र है, जिसमें औपचारिक पूर्व-प्राथमिक शिक्षा प्रणाली, अनौपचारिक एवं घरेलू बाल देखभाल कार्यक्रम और अभिभावक शिक्षा कार्यक्रम शामिल हैं। कोविड महामारी (2019) के कारण सभी स्तरों पर शिक्षा प्रभावित हुई, परंतु ई.सी.सी.ई. शिक्षा के अन्य स्तरों की तुलना में अपनी ओर बिल्कुल ही ध्यान नहीं खीच पाया। समावेशी और गुणवत्तापूर्ण प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा औपचारिक स्कूल की तैयारी, बुनियादी शिक्षा और आजीवन कल्याण को बढ़ावा देने के लिए महत्वपूर्ण हैं। आज भी कम आय वाले देशों में लगभग 60 प्रतिशत बच्चों को प्रारंभिक देखभाल और सीखने के अवसरों तक पहुँच नहीं है।[19]

ई.सी.सी.ई. की अवधारणा में तीन मुख्य विकासात्मक चरण शामिल हैं—

- जन्मपूर्व से जन्म तक
- जन्म से 3 वर्ष की आयु तक
- 3–8 वर्ष की आयु तक

मस्तिष्क विकास से संबंधित शोध (*क्रिटिकल पीरियड ऑफ़ डेवलपमेंट*, 2023)[20] में जन्मपूर्व से जन्म तक की अवधि को एक महत्वपूर्ण विकासात्मक चरण के रूप में विस्तारित करने का सुझाव देता है। ऐसे कई कारक हैं जो मातृ स्वास्थ्य और गर्भाशय के वातावरण को प्रभावित करते हैं, जो शिशु के मस्तिष्क के उल्लेखनीय विकास पर भी प्रभाव डालता है। ई.सी.सी.ई. से संबंधित नीतियाँ शैशवावस्था से शुरू होकर 1,000 दिनों तक चलती हैं, परंतु जन्म-पूर्व चरण विकास प्रक्रिया के सबसे महत्वपूर्ण भागों में से एक है। विकास की जन्मपूर्व अवधि गर्भाधान और जन्म (जिसे गर्भावस्था भी कहा जाता है) के बीच की अवधि है और यह मस्तिष्क के उल्लेखनीय विकास का समय है। उदाहरण के लिए, मानव मस्तिष्क को बनाने वाले 85 बिलियन न्यूरॉन्स में से अधिकांश इस अवधि के दौरान उत्पन्न होते हैं और कई शुरूआती दौर में अंतिम रूप से मस्तिष्क में स्थायी जगह ग्रहण कर लेते हैं। तंत्रिका विज्ञान से संबंधित शोध (दौएते, 2014)[21] यह बताता है कि किसी व्यक्ति के मस्तिष्क का 85 प्रतिशत से अधिक विकास 6 वर्ष की आयु तक हो जाता है, जो मस्तिष्क के निरंतर विकास और वृद्धि को

बढ़ावा देने के संदर्भ में बच्चे के शुरूआती वर्षों में उचित देखभाल के महत्व को दर्शाता है।[22] इसी तरह, कई शोधों के परिणामस्वरूप यह पता चला है कि मातृ मनोदशा बच्चे के विकासशील मस्तिष्क और परिणामस्वरूप आने वाले वयस्क जीवन को आकार देती है। इस प्रकार, यह देखते हुए कि संपूर्ण मानव मस्तिष्क जन्म से पहले विकसित होता है, यह महत्वपूर्ण है कि ई.सी.सी.ई. से संबंधित चर्चा और नीति में भ्रूण की अवधि को शामिल किया जाए जिस पर जीवन भर का ज्ञान आधारित होता है।[23]

निष्कर्ष

कल्पना चावला (2003) 24 ने अंतरिक्ष यात्रा के बाद अपने एक साक्षात्कार में कहा था — "मैं अब वास्तव में पृथ्वी के लिए अधिक ज़िम्मेदार महसूस करती हूँ। पृथ्वी पर बहुत से लोग ऐसे मुद्दों पर बहस या लड़ाई कर रहे हैं जिनका कोई विशेष महत्व नहीं है। हम सभी को यह समझना चाहिए कि पृथ्वी की तस्वीर बहुत बड़ी है और उसे देखने के लिए हमें समय निकालना चाहिए। ...स्पेस– शटल से बिना सीमा वाली धरती सिर्फ नीले रंग की ही नहीं दिखती, बल्कि वास्तव में सभी रंगों को देखा जा सकता हैं।..... यह जो एकत्व का भाव है; समष्टि मूलक सोच है— संधारणीय विकास की अवधारणा को फलीभूत करने के लिए आवश्यक है। बच्चे के बचपन को समृद्ध करके ही एक ऐसे मानवमन की रचना की जा सकती है, जो वैश्विक परिप्रेक्ष्य में सभी चीज़ों को समझ सके।" यूनेस्को, वर्ल्ड बैंक, संयुक्त राष्ट्र संघ जैसी संस्थाओं को ई.सी.सी.ई. की अवधि को वरीयता देते हुए दुनिया के सभी देशों को इस अवधारणा के प्रति संवेदनशील बनाना होगा। शिक्षाविदों की दूरदर्शिता को ई.सी.सी.ई. के संदर्भ में समझने के पश्चात यह लेख इस निष्कर्ष पर पहुँचता है कि समष्टि मूलक समाज बनाने के लिए ई.सी.सी.ई. की सार्वभौमिक उपस्थिति अनिवार्य है तथा इस उपस्थिति को भारत की *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, निपुण भारत 2021* और *विद्या प्रवेश मॉड्यूल 2022* में दिए गए दिशा-निर्देश को अपना कर साकार रूप दिया जा सकता है।

संदर्भ

1 *द इंडिया अर्ली चाइल्डहुड एजुकेशन इंपैक्ट स्टडी*. पृष्ठ संख्या 5. 15 मई, 2024, यूनाइटेड नेशंस चाइल्ड चिल्ड्रेन्स फंड (यूनिसेफ), 2017.

2 मानव संसाधन विकास मंत्रालय. 2020. *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020.* पृष्ठ संख्या 16. https://www.education.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/NEP_final_HINDI_0.pdf. 15 मई, 2024 को प्राप्त किया गया।

3 मानव संसाधन विकास मंत्रालय. 2020. *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020.* पृष्ठ संख्या 17. https://www.education.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/NEP_final_HINDI_0.pdf. 15 मई, 2024 को प्राप्त किया गया।

4 यूनाइटेड नेशंस चाइल्ड चिल्ड्रेन्स फंड (यूनिसेफ). 2017. *द इंडिया अर्ली चाइल्डहुड एजुकेशन इंपैक्ट स्टडी*. पृष्ठ संख्या 5. 15 मई, 2024 को प्राप्त किया गया।

[5] *नेशनल अर्ली चाइल्डहुड केयर एंड एजुकेशन पॉलिसी*, 2013. पृष्ठ संख्या 3. https://platform.who.int/docs/default-source/mca-documents/policy-documents/policy/ind-cc-37-06-policy-2013-eng-national-early-childhood-care-and-education-resolution.pdf. 20 मई, 2024, को प्राप्त किया गया।

[6] *नेशनल अर्ली चाइल्डहुड केयर एंड एजुकेशन पॉलिसी*, 2013. पृष्ठ संख्या 3. https://platform.who.int/docs/default-source/mca-documents/policy-documents/policy/ind-cc-37-06-policy-2013-eng-national-early-childhood-care-and-education-resolution.pdf. 23 मई, 2024 को प्राप्त किया गया।

[7] *नेशनल अर्ली चाइल्डहुड केयर एंड एजुकेशन पॉलिसी*, 2013. https://platform.who.int/docs/default-source/mca-documents/policy-documents/policy/ind-cc-37-06-policy-2013-eng-national-early-childhood-care-and-education-resolution.pdf. 18 जून, 2024 को प्राप्त किया गया।

[8] *विद्या प्रवेश थ्री-मंथ प्ले बेस्ड स्कूल प्रीपेरशन मॉड्यूल फ़ॉर ग्रेड 1*, 2022

[9] *बुनियादी शिक्षा हेतु राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा. 2022*. https://ncert.nic.in/flipbook/NCF/National_Curriculum_Framework_for_Foundational_Stage_2022/mobile/index.html.

[10] *एनस्योर इंक्लूसिव एंड एक्कवीटेबल क्वालिटी एजुकेशन एंड प्रमोट लाइफलॉन्ग लर्निंग अपॉचुर्निटीज फ़ॉर ऑल.* https://www.globalgoals.org/goals/4-quality-education/ 18 जून 2024 को प्राप्त किया गया।

[11] यूनेस्को. 1990. *वर्ल्ड डेकलेरेशन ऑन एजुकेशन फ़ॉर ऑल*. जोमाटियन, थाईलैंड, https://unesdoc.unesco.org/ark:/48223/pf0000127583, 18 जून 2024 को प्राप्त किया गया।

[12] *मॉस्को फ्रेमवर्क फ़ॉर एक्शन एंड को-परेशन*. जरेमाटियन, थाइलैंड, 1990, https://unesdoc.unesco.org/ark:/48223/pf0000189882. 18 जून 2024 को प्राप्त किया गया।

[13] ग्लोबल रिपोर्ट ऑन अर्ली चाइल्डहुड केयर एंड एजुकेशन: दे राइट टू अ स्ट्रोंग फाउंडेशन. https://www.unesco.org/en/early-childhood-education/need-know. 18 जून 2024 को प्राप्त किया गया।

[14] *वाट ऐज डु चिल्ड्रेन स्टार्ट स्कूल?* https://expatchild.com/school-starting-ages-around-world/ 18 जून 2024 को प्राप्त किया गया।

[15] शेंकनर, डब्लू. 1976. *द हिंदू पर्सनालिटी इन एजुकेशन*. पृष्ठ संख्या 50. मनोहर बुक सर्विस, नई दिल्ली.

[16] शेंकनर, डब्लू. 1976. *द हिंदू पर्सनालिटी इन एजुकेशन*. पृष्ठ संख्या 50. मनोहर बुक सर्विस, नई दिल्ली.

[17] *द एजुकेशनल थ्योरी ऑफ़ जोहान्न हेनरिच पेस्टोलोजी*. 2013. न्यू फाउंडेशन. https://www.newfoundations.com/GALLERY/Pestalozzi.html 24 जून 2024 को प्राप्त किया गया।

[18] वाट यू नीड टू नो अबाउट अर्ली चाइल्डहुड केयर एंड एजुकेशन. https://www.unesco.org/en/early-childhood-education/need-know. 24 जून 2024 को प्राप्त किया गया।

[19] *ग्लोबल रिपोर्ट ऑन अर्ली चाइल्डहुड केयर एंड एजुकेशन: द राइट टू अ स्ट्रोंग फाउंडेशन*, 2024. https://unesdoc.unesco.org/ark:/48223/pf0000390215 से 24 जून 2024 को प्राप्त किया गया।

[20] क्रिटिकल पीरियड ऑफ़ डेवलपमेंट, https://www.ncbi.nlm.nih.gov/books/NBK582659/ 18 जून 2024 को प्राप्त किया गया।

21 दौएत, वेनेसा और लिंडा चांग.2015. *नेशनल लाइब्रेरी ऑफ़ मेडिसन*, संयुक्त राज्य अमेरिका, https://www.ncbi.nlm.nih.gov/pmc/articles/PMC3969783/ 24 जून 2024 को प्राप्त किया गया।

22 *बुनियादी स्तर हेतु राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा*, 2022. पृष्ठ संख्या 15. 24 जून 2024 को प्राप्त किया गया।
https://ncert.nic.in/flipbook/NCF/National_Curriculum_Framework_for_Foundational_Stage_2022/mobile/index.html 24 जून, 2024 से प्राप्त किया गया है।

23 *पॉलिसी ब्रीफ:अर्ली चाइल्डहुड केयर एंड एजुकेशन (ई.सी.सी.ई.). बेसिक पॉइंट्स फ़ॉर पॉलिसी असेसमेंट* 2023. https://unesdoc.unesco.org/ark:/48223/pf0000387623 26 जून 2024 से प्राप्त किया गया है।

24 चावला, कल्पना. *फ्रॉम द आरचीव्स: आई रियली फेल्ट रेस्पोंसिबल फ़ॉर द अर्थ*. https://www.indiatoday.in/india-today-insight/story/from-the-archives-i-really-felt-responsible-for-the-earth-kalpana-chawla-1926075-2022-03-16 26 जून, 2024 से प्राप्त किया गया है।